International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 (www.ijsrset.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRSET

माध्यमिक शिक्षा और शिक्षक के संदर्भ में, मूल्य एवं मूल्यपरक शिक्षा की विवेचना

(In the Context of Secondary Education and Teacher, Value and Value Education)

डॉ. सर्वेश चन्द्र

(असिस्टेंट प्रोफेसर) एम.एड. विभाग, जी.एफ.पी.जी.कालेज शाहजहांपुर

Article Info
Volume 9, Issue 1
Page Number : 308-314

Publication Issue :
January-February-2022

Article History
Accepted : 20 Feb 2022
Published: 28 Feb 2022

सारांश :

शिक्षा को अंग्रेजी में एजुकेशन (Education) कहते हैं। एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'एडुकेटम' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'शिक्षित करना' लैटिन भाषा के दो शब्द एजुसीयर और एजुकेयर भी शिक्षा के इसी अर्थ की ओर संकेत करते हैं। जब हम शिक्षा पर चर्चा करते हैं तो मूल्य इससे अपने आप जुड़ जाता है मूल्य शिक्षा की आत्मा है और मूल्यपरक शिक्षा सबका दायित्व है जिसके अंतर्गत परिवार विद्यालय एवं समाज आते हैं परिवार और समाज अनौपचारिक मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व निभाते हैं किंतु अध्यापकों के कंधों पर अनौपचारिक एवं औपचारिक मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व होता है। माता-पिता के बाद गुरु को ही सबसे ऊपर माना गया है। गुरु अर्थात शिक्षक उस कुम्हार के समान है जो मिट्टी रूपी विद्यार्थी को एक बरतन का आकार देकर एक योग्य व उपयोगी पात्र बना देता है। गुरू किसी भी छात्र को ऐसी शिक्षा देकर एक बेहतर मनुष्य बना देता है। एक शिक्षक ही विद्यार्थी को समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्वों से रुबरु कराता है। एक शिक्षक का सबसे मुख्य काम यह है कि वह अपने विद्यार्थी को वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर शिक्षा दे।

मुख्य शब्दावली : मूल्य, मूल्य शिक्षा, मूल्य परक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, विद्यार्थी, शिक्षक, आदि

प्रस्तावना :

शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष होता है। इसके द्वारा मानव अपना आर्थिक सामाजिक विकास करता है एवं जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है। अपने आचार विचार एवं रहन-सहन में परिवर्तन एवं परिमार्जन करता है। शिक्षा के द्वारा ही समाज की आर्थिक वैज्ञानिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति होती है। दार्शनिक लाँक का कहना है कि पौधों का विकास कृषि के द्वारा तथा मनुष्य का विकास शिक्षा के द्वारा होता है। शिक्षा को अंग्रेजी में एजुकेशन कहते हैं एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'एडुकेटम' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'शिक्षित करना' लैटिन भाषा के दो शब्द एजुसीयर और एजुकेयर भी शिक्षा के इसी अर्थ की ओर संकेत करते हैं।

शिक्षा एक ऐसी निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों को स्वाभाविक एवं विरोध हीन विकास में योगदान देती है सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन प्राप्त करने में उसकी सहायता करती है उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है उसे इस योग्य बनाती है कि वह एक नागरिक के कर्तव्य एवं दायित्व को भली प्रकार से निभा सके इसके अतिरिक्त शिक्षा उसके विचार एवं व्यवहार में ऐसा परिवर्तन करता है जो उसके अपने साथ समाज के लिए हितकर होता है महात्मा गांधी ने कहा है कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के रूपों को उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास करता है विवेकानंद ने कहा है कि मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

जब हम शिक्षा पर चर्चा करते हैं तो मूल्य इससे अपने आप जुड़ जाता है मूल्य शिक्षा की आत्मा है और मूल्यपरक शिक्षा सबका दायित्व है जिसके अंतर्गत परिवार विद्यालय एवं समाज आते हैं परिवार और समाज अनौपचारिक मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व निभाते हैं किंतु अध्यापकों के कंधों पर अनौपचारिक एवं औपचारिक मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व होता है शिक्षक छात्रों को शारीरिक मानसिक नैतिक आध्यात्मिक दायित्वों से मुक्त नहीं हो सकता है मूल्यपरक शिक्षा की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है जो विद्यार्थियों को इतना सक्षम बनाते हैं कि छात्र स्वयं मुल्यो को तलाश कर नैतिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। शिक्षा सभी रूपों में जीवन मूल्यों के साथ-साथ गहराई से संबंधित होती है यहां यह आवश्यक होगा कि मूल्यपरक शिक्षा पर चर्चा से पूर्व मूल्य के विषय में चर्चा अनिवार्य हो।

मूल्य :

मूल्य शब्द का शाब्दिक अर्थ महत्त्व, योग्यता, उपयोगिता तथा कीमत आदि से है। दूसरे शब्दों में मूल्य का अर्थ ही व्यक्ति या वस्तु के उस गुण से है जो उसे महत्वपूर्ण सम्माननीय, उपयोगी या कीमती बनाता है। यह मूल्य आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार का हो सकता है। मूल्य शब्द के शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त इसके दार्शनिक एवं शैक्षिक अर्थ भी होते हैं। दार्शनिक अर्थ में मूल्य का तात्पर्य विचार अथवा दृष्टिकोण से होता है। किसी व्यक्ति को कोई वस्तु या उत्तम अथवा उपयोगी लगती है तो वह उसके लिए मूल्यवान है। इसके विपरीत यदि वही वस्तु किसी अन्य व्यक्ति को बुरी लगती है तो उस व्यक्ति के लिए उसकी कोई महत्व, उपयोगिता अथवा मूल्य नहीं है। शिक्षा के मूल्य महत्व रखते हैं साथ ही शिक्षा में इनको निश्चित करने की समस्या भी होती है। मूल्य शिक्षा उद्देश्यों पर निर्भर होते हैं। यदि शिक्षा के उद्देश्य स्पष्ट हैं तो शिक्षा के मूल्य भी स्पष्ट होंगे।

ब्रू बेकर के अनुसार मूल्यों को बताने से ही शिक्षा के उद्देश्य सीमित हो जाते हैं। इन मूल्यों को शैक्षिक मूल्य कहते हैं। इनको समझने के लिए मूल्य का अर्थ जानना आवश्यक है। समाज की समस्त ऐसी इच्छाएं अभिलाषाएं मूल्य कही जाती हैं जो कि अनुबंधन की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति में अंतर्निहित हो जाती हैं। जो कि समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा भी उस व्यक्ति की प्राथमिकताओं रूचियों महत्वाकांक्षाओं के रूप में प्रकट होती हैं। किसी व्यक्ति का किसी प्रकार का दबाव अथवा डर दिखाए बिना किसी निश्चित समय में उसके द्वारा किए जाने वाले व्यवहार या क्रिया के माध्यम से उसके मूल्यों का आकलन किया जा सकता है सामान्यतः मूल्य व्यक्ति के स्वयं के चयन द्वारा निर्धारित होते हैं। बच्चों में मूल्यों का विकास परिवार और समुदायों की क्रियाओं में भाग लेने से स्वाभाविक रूप से होता है परंतु आज भारत में परिवार और समुदाय का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण मूल्यों का विकास के लिए उपयुक्त नहीं है। प्रेम के स्थान पर द्वेष की शिक्षा और सहयोग के स्थान पर असहयोग की शिक्षा आज घर घर की कहानी होकर रह गई है और ऐसा हो भी क्यों न ? स्वार्थ प्रधान व्यक्तियों के बीच बच्चे परमार्थ की शिक्षा कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसी कारण यह कार्य विद्यालयों के कंधों पर पूर्ण रूप से आ गया है। आज समाज में चारों ओर नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिलती है। इस गिरावट के फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में भी गिरावट देखने को मिल रही है। आज समाज में सामान्य आदमी की यह धारणा है कि मेहनतकश एवं ईमानदार व्यक्ति पीस रहे हैं और झूठ, फरेब का रोजगार करने वाले फल फूल रहे हैं। इस तरह चाहे वह राजनीतिज्ञ हो या उच्च स्तरीय अधिकारी हो या फिर निम्न स्तरीय कर्मचारी, डॉक्टर या वकील अध्यापक या न्यायपालिका के कर्मचारी हो, सभी अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार में लिप्त है। कोई भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन भली-भांति ढंग से नहीं कर रहा है। थोड़ी बहुत जो ईमानदारी है भी तो उनकी आवाज को दबा दी जाती है। चारों और भ्रष्टाचार का बोलबाला है और इन सब का एक ही कारण है वह है नैतिक मूल्यों का अभाव। इसी कारण जीवन मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने की सबसे ज्यादा आवश्यकता महसूस की जा रही है ।

प्रोफेसर आर.बी. लाल के अनुसार मूल्य समाज के विश्वासों, आदर्शो और सिद्धांतों अथवा व्यवहार मानदंडों को व्यक्ति द्वारा दिया गया महत्व है जिसके आधार पर उसका व्यवहार नियंत्रित एवं निर्देशित होता है व्यक्ति के इन मूल्यों का विकास समाज की क्रियाओं में भाग लेने से होता है। मूल्य मुख्यतः निम्नलिखित आयाम के होते हैं।

- ✓ व्यक्ति का आत्म
- ✓ आत्म एवं अन्य व्यक्ति जिनके साथ वह प्रतिदिन अंतः क्रिया करते हैं
- ✓ सामाजिक मानक।

मूल्य के प्रकार :

मूल्य दो प्रकार के होते हैं।

- ✓ साधन मूल्य
- ✓ आन्तरिक मूल्य या साध्य मूल्य

मूल्यों का आधार विश्वास होता है मूल एक शाश्वत वस्तु है जो व्यक्ति या वस्तु में अंतर्निहित रहता है मूल्य प्राथमिकता से संबंधित है वह प्राथमिकता के आधार पर ही चुनाव रहता है। इनमें पांच मूल्य मानवीय मूल्य कहलाते हैं जो निम्न है।

सत्य, अच्छा चरित्र, शांति, प्रेम, अहिंसा आदि।

मूल्य शिक्षा :

शिक्षा हमारे अंदर नैतिक मूल्यों का विकास करती है। ये सीखने के साथ-साथ हमारे व्यक्तित्व का भी विकास करती है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक लॉरेंस कोहलबर्ग का मानना था कि बच्चों को एक ऐसे माहौल में रहने की जरूरत है जो दिन-प्रतिदिन के संघर्षों की खुली और सार्वजनिक चर्चा के लिए अनुमति देता है। Iमूल्य शिक्षा हमारे पर्सनालिटी डेवलपमेंट में सहायक है तथा विद्यार्थी के गुणों में विकास करता है। यह हमारे जीवन में अनुशासन के महत्व को भी बताता है। इतना ही नहीं यह हमारे अंदर समय के महत्व को समझने की क्षमता को विकसित करता है। खेल के महत्व को समझना, भी मूल्य शिक्षा को समझने तथा रोचक ढंग से व्यक्तित्व के विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है

मूल्य शिक्षा से तात्पर्य विद्यार्थियों में मानवता, देश-प्रेम व दूसरों के लिए कल्याण इत्यादि अनेक अच्छी भावनाओं का संचार करना है। मूल्य शिक्षा द्वारा मानव संस्कारित एवं योग्य बनता है। मूल्य हमें ऐसे दृष्टिकोण की ओर प्रेरित करते हैं, जो हमारे जीवन में मन-मस्तिष्क को स्वच्छता प्रदान करते हैं।

मूल्यों के विकास में विद्यालय की आंतरिक व्यवस्था, शिक्षकों का आदर्श, आपसी सहयोग, बच्चों के प्रति भावनाओं आदि का विशेष महत्त्व है।

मूल्य शिक्षा की परिभाषा:

मूल्य शिक्षा को हम निम्नलिखित परिभाषाओं के माध्यम से परिभाषित कर सकते हैं-

डी. एच. पार्कर के अनुसार," मूल्य पूर्णतयाः मन के साथ संबंधित है। इच्छा की पूर्ति वास्तविक मूल्य है, जिससे वह इच्छा पूरी होती है वह केवल साधन है। मूल्य का संबंध हमेशा अनुभव से होता है, किसी वस्तु के साथ नही।"

ब्रुबेकर के अनुसार," किसी के शिक्षा उद्देश्यों को व्यक्त करना वस्तुतः उसके शिक्षा-मूल्यों को व्यक्त करना है।

ए. के. सी. ओटावे के अनुसार," मूल्य वे विचार है जिनके लिए मनुष्य जीते है।"

जैक आर. फ्रैंकलिन के अनुसार," मूल्य आचार, सौंदर्य, कुशलता या महत्व के वे मानदण्ड है, जिनका लोग समर्थन करतें है, जिनके साथ वे जीते है तथा जिन्हें वे कायम रखते है।"

जा ॅन जे. काने के अनुसार," मूल्य वे आदर्श, विश्वास या मानक हैं, जिन्हें समाज या समाज के अधिकांश सदस्य ग्रहण किए हुए होते हैं।

ऑगबर्न के अनुसार," मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करें।"

मूल्य शिक्षा के उद्देश्य :

समकालीन दुनिया में मूल्य शिक्षा का महत्व कई गुना है। हमारे लिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि मूल्य शिक्षा एक बच्चे की स्कूली यात्रा में शामिल है और उसके बाद भी यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे नैतिक मूल्यों के साथ-साथ नैतिकता को भी आत्मसात करें। यहाँ मूल्य शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य दिए गए हैं-

1. शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं के संदर्भ में बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए एक सभी दृष्टिकोण सुनिश्चित करना।
2. देशभक्ति की भावना के साथ-साथ एक अच्छे नागरिक के मूल्यों में वृद्धि करना।
3. छात्रों को सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाई चारे के महत्व को समझने में मदद करना।
4. अच्छे शिष्टाचार, जिम्मेदारी और सहकारिता का विकास करना।
5. रूढ़िवादी विवरण की ओर जिज्ञासा और जिज्ञासा की भावना को बढ़ावा देना।
6. नैतिक सिद्धांतों के आधार पर ध्वनि निर्णय लेने के तरीके के बारे में छात्रों को सिखाना।
7. सोच और जीने के लोकतांत्रिक तरीके को बढ़ावा देना।
8. सहनशीलता और विभिन्न संस्कृतियों और धार्मिक विश्वासों के प्रति सम्मान के महत्व के साथ छात्रों को लागू करना।

मूल्य शिक्षा का महत्व और आवश्यकता :

मूल्य शिक्षा को एक अलग अनुशासन के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, लेकिन शिक्षा प्रणाली के अंदर शामिल होना चाहिए। केवल समस्याओं को हल करना उद्देश्य नहीं होना चाहिए, इसके पीछे के स्पष्ट कारण और मकसद के बारे में भी सोचा जाना चाहिए । मूल्य शिक्षा का महत्व कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने में मदद करता है जिससे निर्णय लेने की क्षमता में सुधार होता है। उम्र के साथ जिम्मेदारियों की एक विस्तृत श्रृंखला आती है। यह कई बार अर्थहीनता की भावना को विकसित कर सकता है और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विकारों, मध्य संकट और किसी के जीवन के साथ बढ़ते असंतोष को जन्म दे सकता है। मूल्य शिक्षा का उद्देश्य कुछ हद तक लोगों के जीवन में शून्य भरना है। मूल्य शिक्षा का महत्व जिज्ञासा जगाने, मूल्यों और हितों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह आगे कौशल विकास में मदद करता है। इसके अलावा, जब लोग समाज और उनके जीवन में मूल्य शिक्षा का अध्ययन करते हैं, तो वे अपने लक्ष्यों और जुनून के प्रति अधिक उत्साहित और बंधे हुए होते हैं। इससे जागरूकता का विकास होता है जिसके परिणामस्वरूप विचारशील और पूर्ण निर्णय लेते हैं । इसके अतिरिक्त संविधान के अनुच्छेद 36 से 51 तक प्रदत्त मूल अधिकार एवं अनुच्छेद 51(A) में प्रदत्त मूल कर्तव्य भी राष्ट्रीय मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं जो कहीं न कहीं मूल्य के ही रूप है । भारत में गठित विभिन्न अवसरों पर विभिन्न आयोगों एवं समितियों की रिपोर्टों में भी मूल्य शिक्षा प्रदान करने पर विशेष जोर दिया गया है । स्वतंत्रता के पश्चात गठित आयोग राधाकृष्णन आयोग 1948 49, मुदालियर आयोग 1952-53, कोठारी आयोग 1964, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, राष्ट्रीय रूपरेखा अधिनियम 2005 में मूल्य शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया गया है ।

जीवन में मूल्य शिक्षा का महत्त्व :

हमारे जीवन में जीवन मूल्य शिक्षा का बहुत महत्व है। मूल्य शिक्षा के माध्यम से हर व्यक्ति समाज में सकारात्मक मूल्यों के क्षमताओं और अन्य प्रकार के व्यवहार को विकसित करता है जिसमें वह रहता है'। मूल्य शिक्षा का अर्थ है, दैनिक जीवन में कौशल, व्यक्तित्व के सभी दौरों को समझना। इसके माध्यम से छात्र जिम्मेदारी, अच्छी या बुरी दिशा में जीवन का महत्व, लोकतांत्रिक तरीके से जीवन यापन, संस्कृति की समझ, महत्वपूर्ण सोच आदि को समझ सकते हैं। मूल्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधिक नैतिक और लोकतांत्रिक समाज बनाना है।

मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा :

मूल्यपरक शिक्षा की अवधारण अपेक्षाकृत आधुनिक तथा व्यापक है। परम्परागत रूप से प्रचलित धार्मिक शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा आदि से यह भिन्न भी है। यह 'अमुक कार्य करें' एवं 'अमुक कार्य मत करो' की व्याख्या नही है। यह वह आस्था अथवा विश्वास है कि कुछ कार्य निश्चित रूप से निरपेक्षतः अच्छे हैं तथा कुछ कार्य पूर्णतः अथवा निरपेक्षतः बुरे हैं। इसमें कार्यों के पीछे निहित सद्गुणों पर बल दिया जाता है। यह 'औचित्य के लिए शिक्षा' है। प्रायः मूल्यपरक शिक्षा से आशय उस शिक्षा से है, जिसमे हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित है। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्य परक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है। जिससे उनका सन्तुलित तथा सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।

मूल्य शिक्षा को निम्न दो अर्थों मे प्रयुक्त किया जाता है--

1. मूल्यों की शिक्षा :

मूल्यों की शिक्षा के अंतर्गत हम नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों आदि की शिक्षा इतिहास, भूगोल, गणित, रसायनशास्त्र और भौतिकशास्त्र इत्यादि विषयों की शिक्षा की भाँति एक स्वतंत्र विषय के रूप में देना चाहते हैं।

2. मूल्यपरक शिक्षा :

मूल्यपरक शिक्षा मे सभी विषयों में मनोवैज्ञानिक ढंग से मूल्य समाहित करके निर्धारित मूल्यों के विकास पर बल दिया जाया है। इस शिक्षा में एकीकृत उपागम पर बल दिया जाता है। आज के भारतीय संदर्भ में 'मूल्य शिक्षा को दूसरे अर्थ में स्वीकार किया जाना चाहिए। मूल्यपरक शिक्षा की विषय-वस्तु मूल्यपरक शिक्षा मे समाहित मूल्यों अथवा विषय-वस्तु को निम्न वर्गों मे विभक्त किया जा सकता है--

1. शास्त्रीय मूल्य :

शिक्षण में नियमितता तथा निष्ठा, मूल्यांकन में निष्पक्षता, अनुसंधान तथा प्रकाशन में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा, स्वस्थ प्रतियोगिता तथा वस्तुनिष्ठता एवं सृजनशीलता आदि आते हैं।

2. नैतिक मूल्य :

सच्चाई, सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व की भावना एवं दूसरों के प्रति दया भाव आदि नैतिक मूल्य की विशेषता हैं।

3. सामाजिक-राजनैतिक मूल्य :

राष्ट्रीय एकता तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, सामाजिक दायित्व तथा नागरिकता, लोकतंत्र तथा मानवतावाद आदि सामाजिक-राजनैतिक मूल्य हैं।

4. वैज्ञानिक स्वभाव मूल्य :

वस्तुनिष्ठता, विवेक, तथ्याधारित खोज-उपागम, सृजनात्मक चिन्तन, जिज्ञासा एवं समस्या-समाधान-उपागण आदि वैज्ञानिक मूल्य हैं।

5. संवैधानिक मूल्य :

आर्थिक तथा सामाजिक न्याय और राजनैतिक समानता, भ्रातृत्व, एकता एवं धर्मनिरपेक्षता आदि संवैधानिक मूल्य हैं।

6. वैश्विक मूल्य :

वैश्विक शान्ति, सभी के लिए स्वतंत्रता तथा न्याय, पूर्ण निःशस्त्रीकरण एवं सभी तरह की दासता की समाप्ति ही वैश्विक मूल्य हैं।

7. पर्यावरणीय मूल्य :

प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण एवं पर्यावरण सजगता आदि पर्यावरणीय मूल्य कहलाते हैं।

8. सांस्कृतिक मूल्य :

सांस्कृतिक एकता दूसरी संस्कृतियों को सम्मान एवं संस्कृति की सुरक्षा आदि सांस्कृतिक मूल्यों की श्रेणी में आते हैं। उक्त मूल्य तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् द्वारा निर्धारित तिरासी (83) मूल्यों को निम्न छः समूहों में वर्गीकृत किया गया है। उक्त मूल्य तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् द्वारा निर्धारित मूल्यों को मूल्यपरक शिक्षा में विशेष स्थान दिया जाना चाहिए--

- ✓ साधुता अथवा न्यायप्रयिता :

स्वच्छता, सत्यनिष्ठा, समाज-कल्याण, सहयोग, साहस, अनुशासन, धैर्य, मित्रता, स्वामी-भक्ति, शिष्टाचार, न्याय, आज्ञापालन समय का सदुपयोग, पवित्रता, ज्ञान-पिपासा, सादा-जीवन, स्व-सहायता, स्वाध्याय, आत्मनिर्भरता, आत्म-विश्वास, आत्म-सम्मान, सहानुभूति, सत्य तथा असत्य एवं अच्छाई एवं बुराई में भेद करने की भावना, सहिष्णुता और सच्चाई इत्यादि।

- ✓ स्वनुशासन :

आत्म-नियंत्रण, समयबद्धता, नियमितता, ईमानदारी, भक्ति अथवा निष्ठा, सत्यनिष्ठा, पहलकदमी, शुभचिन्ता, साधन-सम्पन्नता, जिज्ञासा, खोज-प्रवृत्ति एवं भावी दृष्टिकोण आदि।

- ✓ मित्र-भाव :

सहायता, दूसरों को सम्मान तथा आदर, टीम भावना से कार्य, टीम भावना एवं दूसरों का हित चिन्तन आदि।

- ✓ मानवतावाद:

व्यक्ति की गरिमा, शारीरिक श्रम को आदर,

मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्य :

विद्यालय स्तर शिक्षा में मूल्यपरक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए--

1. छात्रों में सहयोग, प्रेम तथा करूणा, शांति और अहिंसा, साहस, समानता, बन्धुत्व, श्रम-गरिमा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विभेदीकरण की शक्ति आदि मौलिक गुणों का विकास करना।

2. छात्रों को एक उत्तरदायी नागरिक बनने हेतु प्रशिक्षित करना।

3. राष्ट्रीय लक्ष्य, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता एवं लोकतंत्र का सही ढंग से बोध करना।

4. देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के संबंध में उन्हें जागरूक बनाना। साथ ही उनमें वांछित सुधार लाने हेतु प्रोत्साहित करना।

5. निम्नलिखित के प्रति उनमें समुचित दृष्टिकोण विकसित करना--

- ✓ स्वयं तथा अपने साथियों के प्रति।
- ✓ स्वदेश के प्रति।
- ✓ मानवता के प्रति।
- ✓ सभी धर्मों तथा विभिन्न संस्कृतियों के प्रति।
- ✓ जीवन शैली तथा पर्यावरण के प्रति।

6. छात्रों को स्वयं को जानने हेतु प्रोत्साहित करना, जिससे वे स्वयं मे आस्था रखने में समर्थ हो सकें।

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता :

भारत अपनी कला, संस्कृति एवं दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर हमेशा गर्व करता रहा हैं, लेकिन आज अनास्था एवं पारम्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा तथा मूल्य धूमिल से हो गये हैं। आधुनिकता की भ्रामक अवधारण, अस्तित्वादी जीवन, अनात्मपरक नास्तिकता, पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण एवं कुतर्क प्रधान चिन्तन आदि के कारण अतीत में अविश्वास तथा 'स्व' में अनास्था आदि कारणों से हमारे पुराने मूल्य प्रदूषित हो गये हैं। स्वयं पर अनास्था का परिणाम है-- आत्मनाश अर्थात् अपने आदर्शों तथा मूल्यों, अपनी सांस्कृतिक विरासत, अपनी चिन्तन प्रणाली का परित्याग कर उसके स्थान पर बाहरी अथवा विदेशी चिन्तन प्रणाली को शामिल करना। इसके कारण हमारे मूल्य दब से गये हैं। वस्तुतः वे पूर्णतः नष्ट नही हुए हैं, बल्कि विघटित हो गये हैं। मानव नारी का सम्मान करना चाहता है लेकिन कर नही पाता है। वह झूठ, चोरी, डकैती आदि को गलत मानता है पर छोड़ नही पाताव है। वह परपीड़न को पाप तथा परोपकर को पुण्य स्वीकारता तो है लेकिन मन में उतार नही पाता। वह समाज के विभिन्न वस्तुतः वे पूर्णतः नष्ट नही हुए हैं, बल्कि विघटित हो गये हैं। मानव नारी का सम्मान करना चाहता है लेकिन कर नही पाता है। वह झूठ, चोरी, डकैती आदि को गलत मानता है पर छोड़ नही पाताव है। वह परपीड़न को पाप तथा परोपकर को पुण्य स्वीकारता तो है लेकिन मन में उतार नही पाता। वह समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार के प्रति आक्रोश प्रकट करता है लेकिन भ्रष्टाचार का उन्मूलन नही कर पाता। इस तरह आज का प्रत्येक भारतीय संक्रांति काल से होकर गुजर रहा है।

दूसरे शब्दों में," कभी वह पुरातन मूल्यों की तरफ झुकता है तो कभी आधुनिकता की भ्रामक अवधारण की तरफ जाता है, फिर रूककर आत्म चिन्तन करता है। उक्त वातावरण ने मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता की तरफ सभी का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। हमने संक्रमण काल में कर्तव्य अथवा कार्य संस्कृति के स्थान पर उपभोक्ता संस्कृति को अपना लिया है। इस उपभोक्ता संस्कृति ने मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता को और भी प्रबल बना दिया है।

माध्यमिक शिक्षा :

मूल्य शिक्षा का उद्देश्य आदर्श चरित्र का विकास करना है। यह छात्रों को जीवन में बेहतर इंसान बनने में मदद करता है। प्राथमिक, माध्यमिक और विश्व विद्यालय सभी स्तरों पर मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षकों को प्राथमिक स्तर से ही छात्रों को सच्चाई और झूठ जैसे छोटे नैतिक मूल्यों को पढ़ाने जैसे मूल्यों को विकसित करना शुरू करना चाहिए और माध्यमिक छात्रों में साहस, ईमानदारी जैसे विभिन्न मूल्यों को सिखाया जाना चाहिए ताकि वे बेहतर इंसान बन सकें। पुस्तकों के माध्यम से मूल्यों को प्रदान नहीं किया जा सकता है। यहीं पर शिक्षक का व्यक्तित्व महत्वपूर्ण होता है। चरित्र में भावनाएँ सन्निहित हैं। यदि शिक्षक इन मूल्यों का अभ्यास करता है और अपने शिष्यों को अभ्यास के बारे में जागरूक किए बिना ईमानदारी से उनकी साधना के लिए काम करता है, तो ये मूल्य स्वतः ही शिक्षक से शिष्य में स्थानांतरित हो जाते हैं। यह उन्हें जीवन के परिप्रेक्ष्य को बेहतर तरीके से समझने और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में एक सफल जीवन जीने में मदद करता है ।

मूल्य शिक्षा में शिक्षक की भूमिका :

माता-पिता के बाद गुरु को ही सबसे ऊपर माना गया है। गुरु अर्थात शिक्षक उस कुम्हार के समान है जो मिट्टी रूपी विद्यार्थी को एक बरतन का आकार देकर एक योग्य व उपयोगी पात्र बना देता है । गुरू किसी भी छात्र को ऐसी शिक्षा देकर एक बेहतर मनुष्य बना देता है । एक शिक्षक ही विद्यार्थी को समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्वों से रुबरु कराता है । एक शिक्षक का सबसे मुख्य काम यह है कि वह अपने विद्यार्थी को वर्तमान और भविष्य को ध्यान में

रखकर शिक्षा दे। शिक्षा में परंपरा और नवीनता का मिश्रण होना चाहिये। वो विद्यार्थी को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखे बल्कि उसे जीवन के व्यवहारिक ज्ञान की भी शिक्षा दे। विद्यार्थी तो एक गीली मिट्टी के समान होता है शिक्षक उसे जैसा ढालेगा वैसा ढल जायेगा। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। नैतिक मूल्यों की जो शिक्षा वो विद्यार्थी को देगा उसका प्रभाव विद्यार्थी पर जीवन पर्यंत बना रहेगा। यहीं से उसके चरित्र निर्माण की प्रक्रिया आरंभ होगी। अतः नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षक विद्यार्थियों में निम्नलिखित माध्यमों से मूल्य शिक्षा का निर्धारण कर सकता है विद्यार्थियों को प्रेरित करके, महापुरुषों की जीवनी द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करके, शांति, प्रेम, धर्मनिरपेक्षता, एकता, सहयोग, सांस्कृतिक आदि विभिन्न नैतिक गुणों का विकास करके, विद्यार्थियों को सतही ज्ञान से हटाकर मूलभूत आदर्शों मूल्यों हेतु उनके गुणों और अवगुणों का ज्ञान करा करके, शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों में आत्म सम्मान का भाव विकसित करके, मूल्य शिक्षा का विकास किया जा सकता है। अनुशासन बनाए रखने के लिए केवल दंड को ही माध्यम न बनाकर उनकी योग्यता को समझकर, जानकर उनमें सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है।

निष्कर्ष :

अतः स्पष्ट होता है कि मूल्य निर्माण प्रक्रिया में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बालक के प्रारंभिक जीवन में ही उसकी नीव तैयार करनी होती है। इस निर्माण प्रक्रिया में मुख्य पात्र के रूप में घर, विद्यालय, पड़ोस, सभी खेल साथी आदि होते हैं। इसमें महत्वपूर्ण भूमिका परिवार एवं विद्यालय की होती हैं। मूल्य निर्माण की इस प्रक्रिया का निहित घर में परिवार के सदस्य तो विद्यालय में शिक्षक निभाते हैं। विद्यालयों में मूल्य शिक्षा का निर्माण करने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः शिक्षक की जिम्मेदारी न केवल शिक्षा प्रदान करने की होती है बल्कि चरित्र निर्माण एवं विभिन्न नैतिक मूल्यों के विकास की दृष्टि से भी उनकी भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है।

मानव जीवन में मूल्यों का विशेष महत्व है। हमारी गौरवमयी संस्कृति की आधारशिला भी आदर्शवाद व उच्च नैतिक मूल्य रहें हैं। जिन्होंने भौतिक सुखों की अपेक्षा आध्यात्मिक ज्ञान, स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ एवं संकुचित दृष्टिकोण व उपभोक्तावादी विचारों के स्थान पर सादा जीवन उच्च विचार से पूर्ण परम्परा के निर्वाह की पे्ररणा देते रहें हैं। वर्तमान समय में भौतिकता की चकाचौंध में मूल्यों का ह्रास तीव्र गति से हो रहा है। मूल्यों के अवमूल्यन का प्रभाव किसी एक क्षेत्र में नहीं बल्कि समाज के प्रत्येक स्तर पर दृष्टिगोचर हो रहा है। आज के समय में सबसे बड़ी आवश्यकता है, विज्ञान एवं तकनीकी के विकास के युग में मूल्यों के विकास पर भी समुचित ध्यान दिया जाए। शिक्षा ही व्यक्ति तथा समाज में खुशहाली, कल्याण एवं विकास लाने में सहायक होती है। यह मूल्यों के सार्थक दिशा में विकास से ही सम्भव हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. त्यागी एवं पाठक, शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा,।
2. डा. उपध्याय प्रतिभा, भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,।
3. प्रो. पाण्डेय रामशकल, मूल्य शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा,
4. डाॅ. दूबे सत्य नारायण, मूल्य शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,
5. प्रो. लाल रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ,।
6. डा. सक्सेना सरोज, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, साहित्य प्रकाशन आगरा,।
7. प्रो. गुप्ता एस.पी., आधुनिक मापन एवं मुल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,
8. राय पारसनाथ, अनुसंधान परिचय
9. कौल लौकेश, शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि.।
10. प्रो. गुप्ता एस.पी., सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
11. सिंह अरुण कुमार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में शोध विधियाँ मोती लाल बनारसी दास।